

# जौनी ऍपिलसीड



Johnny Appleseed

जौनी ऍपिलसीड  
Johnny Appleseed

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत  
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

रेखांकन: अविनाश देशपांडे  
(अलीकी के मूल चित्रों पर आधारित)

ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

इस किताब का  
प्रकाशन भारत ज्ञान  
विज्ञान समिति ने  
देश भर में चल रहे  
साक्षरता अभियानों  
में उपयोग के लिए  
किया गया है।  
जनवाचन आंदोलन  
के तहत प्रकाशित  
इन किताबों का  
उद्देश्य गाँव के लोगों  
और बच्चों में  
पढ़ने-लिखने  
की रुचि पैदा  
करना है।

प्रकाशन वर्ष: 2000, 2003, 2006

मूल्य: 10 रुपये  
Price : 10 Rupees

Published by Bharat Gyan Vigyan Samithi  
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block  
Saket, New Delhi - 110017  
Phone : 011 - 26569943  
Fax : 91 - 011 - 26569773  
email: bgvs@vsnl.net

# जौनी ऍपिलसीड



## Johnny Appleseed



## जौनी ऍपिलसीड

अंग्रेजी में ए (A) से ऍपिल, यानि सेब होता है।

सीड का मतलब होता है बीज।

दोनों के मिलने से बनता है ऍपिलसीड— यानि सेब का बीज।

यह कहानी है जौनी ऍपिलसीड के बारे में।

बात बहुत पुरानी है, पर है एकदम सच्ची।

26 सितम्बर 1774 को अमरीका में लीयोमिंस्टर,

मैसाचुसेट्स (अमरीका) में, जौन चैपमैन का जन्म हुआ।

परंतु बाद में उसे अंकल जौनी ऍपिलसीड के नाम से जाना गया।

उसका यह नाम इसलिए पड़ा क्योंकि वो जहां भी जाता,

वहां पर सेब के बीज बोता।

जौन चैपमैन एक बहादुर और दयालु इंसान था।

उसे घर से बाहर ही रहना अच्छा लगता था।

वो घंटों जंगलों में पेड़ों और फूलों के बीच, घूमा करता था।

इसमें उसे अपार खुशी मिलती थी।

## Johnny Appleseed

This story is about Johnny Appleseed.

It is an old story. But it is true.

John Chapman was born on 26 September in Leominster,  
Massachusetts, USA.

He was later nicknamed Johnny Appleseed.

He was given this name because

wherever he went he planted appleseeds.

John Chapman was a brave and kind man.

He liked being outdoors.

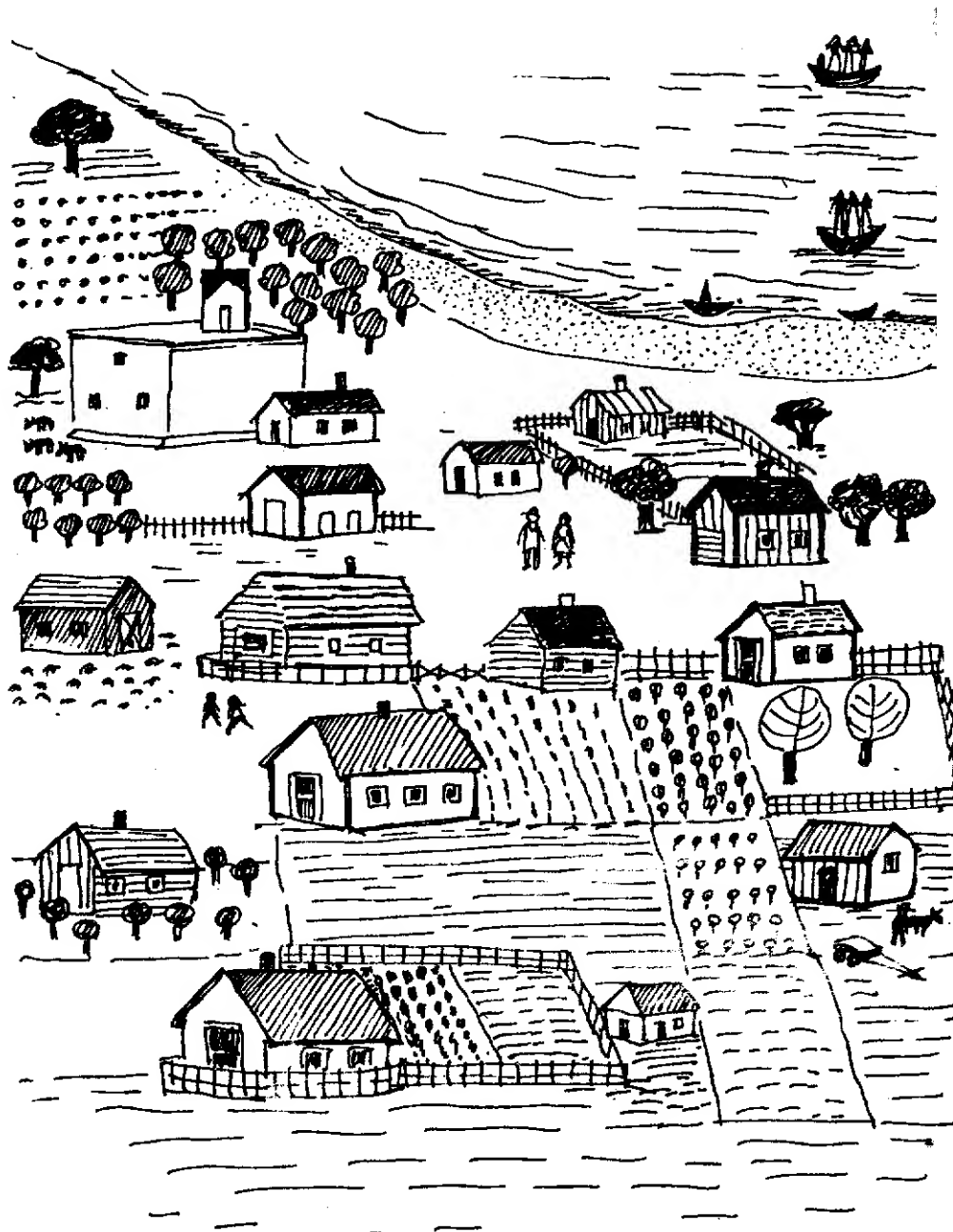
He walked in the forest for hours.

He loved being near wild flowers.



एक दिन,  
 बहुत देर तक घूमने फिरने के बाद  
 जौनी सुस्ताने के लिए एक पेड़ के नीचे बैठ गया।  
 सूरज की गर्म धूप  
 उसकी पीठ को सेंक रही थी  
 और हरी घास उसके तलुवों को सहला रही थी।  
 जौनी ने अपनी थैली में से एक सेब निकाला  
 और उसे खाया।  
 सेब खत्म होने के बाद वो अपनी हथेली पर पड़े  
 सेब के भूरे बीजों को घूरने लगा।  
 जौनी सोचने लगा —  
 अगर सेब के बीजों को इकट्ठा करके  
 उन्हें ज़मीन में बोया जाए तो जल्दी ही सारा देश  
 सेब के पेड़ों से हरा-भरा हो जाएगा।

One day after a long nature ramble  
 he rested under a tree.  
 The hot sun warmed his feet  
 and the green grass tickled his toes.  
 He took out an apple from his bag.  
 After eating the apple he gaped  
 at the brown apple seeds lying on his palm.  
 He thought that if could collect  
 enough of those seeds and plant them  
 all over then the whole country would become  
 green with apple trees.



जौन चैपमैन अमरीका के  
पूर्वी भाग में रहता था।  
वहां पर काफी लोग पहले से ही बस गए थे।  
परंतु बहुत से पायोनियर (अगुआ लोग)  
अभी भी बसने के लिए पश्चिम की ओर  
पलायन कर रहे थे।  
पश्चिम में न तो कहीं घर थे  
और न ही कोई सड़क  
वहां पर सड़क तक न थी

रड-इंडियन आदिवासियों का प्रयोग

John Chapman lived  
in the eastern part of America.  
Many people had already settled there.  
But many pioneers were still  
migrating towards the west.  
In the west there were  
neither houses nor villages.  
There were no proper roads  
- only dirt tracks  
used by the native Indians.

पायोनियर अपनी बंद घोड़ागाड़ियों में  
सामान लादकर बीहड़ जंगलों में से होते हुए  
लंबी और खतरनाक यात्राएं तय करते।



The pioneers used to  
travel with their belongings  
in closed horse-carriages.  
They trudged through dense forests.  
The journey was long and dangerous.

वे अपने देश के नए हिस्से में  
एक नई ज़िंदगी की शुरुआत करना चाहते थे।  
जॉन चैपमैन ने भी पायोनियरों के साथ यात्रा शुरू की।  
परंतु वो बंद घोड़ागाड़ी में नहीं गया।  
उसने पैदल चलकर ही यात्रा करने की ठानी।  
उसने अपने साथ कोई हथियार भी नहीं लिया।  
वैसे उन दिनों लोग हथियार लेकर ही चलते थे।  
हथियारों से वो खतरों से बचते और  
जंगली जानवरों से अपनी सुरक्षा करते।  
परंतु जॉन चैपमैन की पीठ पर  
केवल एक बोरी लदी थी  
जो कि सेब के बीजों से भरी थी।  
उसके सिर पर टोपी की जगह  
एक लंबे हैंडिल वाला बर्तन था।

These people wanted to begin a new life  
in a different part of their country.  
John Chapman also travelled with the pioneers.  
But he did not go in a horse-carriage.  
He travelled on foot.  
He did not carry any weapon with him.  
In those days people had to carry weapons to  
protect themselves from wild animals and enemies.  
But John Chapman only carried a bag on his back.  
His bag was full of apple seeds.  
Instead of a hat he wore a frying pan  
with a handle on his head.



जौनी चलते-चलते पूरी यात्रा के दौरान  
सभी जगह सेब के बीज बोता जाता।  
उसे जो कोई भी रास्ते में मिलता  
वो उसे सेब के बीजों की छोटी-छोटी थैलियाँ देता।  
धीरे-धीरे सभी लोग जौन चैपमैन को  
अंकल जौनी ऐपिलसीड के नाम से बुलाने लगे।



Johnny planted apple seeds wherever he went.  
He gave little bags of apple seeds to everyone he met.  
Slowly, everyone started calling him Johnny Appleseed.

कभी-कभी यात्रा के बीच में जौनी एक ही स्थान पर  
कई हफ्तों तक ठहर कर पायोनियरों की मदद करता।  
पहले सभी लोग मिलकर ज़मीन साफ करते। फिर लकड़ी के  
लट्टों से घर बनाते। और फिर सैकड़ों सेब के पेड़ लगाते।



During his journey Johnny would often spend  
a few weeks helping the pioneers.  
First everyone would clear the land.  
Then they would make log houses. In the end  
they would plant hundreds of apple trees.



जब सारा काम खत्म हो जाता  
तब जौनी अपनी आगे की यात्रा शुरू करता  
और दूसरे लोगों की सहायता में लगे जाता।  
परंतु वो अपने पुराने मित्रों से मिलने  
के लिए बार-बार वापिस आता।  
सभी लोग जौनी ऐंपिलसीड से प्यार करते।  
खासकर बच्चे।  
जब जौनी सेब के बीज बोते-बोते थक जाता  
और सुस्ताने के लिए बैठता तो बच्चे  
उसे घेरकर बैठ जाते और उससे कहानियां  
और अपने अनुभव सुनाने को कहते।

After finishing the work  
Johnny would move on to help others.  
But he always returned to meet his old friends.  
Everyone loved Johnny Appleseed.  
Especially children.  
When Johnny got tired of planting apple seeds  
he would sit down to rest under some tree.  
Then the children would surround him  
and Johnny would tell them stories  
and his own interesting experiences.





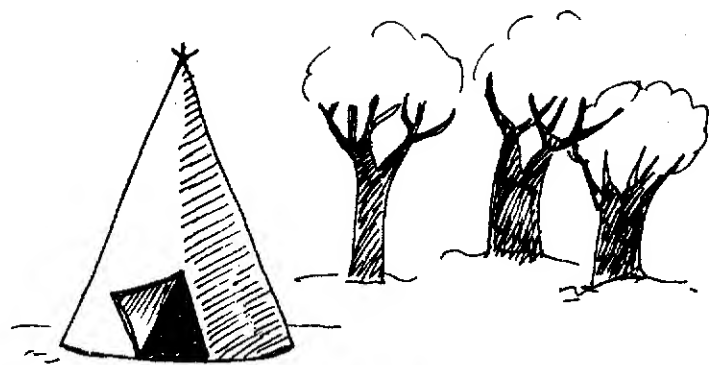
जौनी ऍपिलसीड  
 अकेले ही पैदल यात्रा करता।  
 वो जंगल के अंदर या नदी के किनारे  
 खुले आसमान के नीचे ही सोता।  
 राह में उसे भेड़िए, लोमड़ियां, चिड़िएं  
 और हिरन मिलते।  
 वे सभी उसके दोस्त बन जाते।

Johnny Appleseed  
 always travelled alone on foot.  
 He slept on the forest floor  
 or near a stream under the open sky.  
 On his way he met wolves,  
 jackals, deer and different birds.  
 He had a way of making friends  
 with the animals.



एक दिन दोपहर के समय  
जौनी खाना खा रहा था।  
तभी एक ज़ोर की आवाज़ आई और तीन भालू के बच्चे  
एक पेड़ के पीछे से दौड़ते हुए बाहर निकले।  
कुछ देर बाद  
उन भालू के बच्चों की मां भी बाहर आई।  
जब उसने अपने बच्चों को जौनी के साथ खेलते हुए देखा  
तो वो काफी देर तक उन्हें टकटकी लगाए देखती रही।  
तब जाकर उसे पक्का विश्वास हुआ  
कि जौनी ऐपिलसीड उसके बच्चों को  
किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचाएगा।

One day Johnny was eating  
his afternoon lunch in the forest.  
Suddenly there was a loud roar  
and three bear cubs  
ran out from the thicket.  
After a while the mother bear also came out.  
When she saw her cubs  
happily playing with Johnny Appleseed  
she was assured that  
Johnny meant no harm.  
Only then did she go away.



घुमक्कड़ी के दौरान जौनी को बहुत से  
रेड-इंडियन आदिवासी मिलते।

जौनी उनके साथ

अच्छी तरह पेश आता।

जौनी उन्हें बीज और जड़ी-बूटियां देता

जिनका वो दवाई जैसे इस्तेमाल करते।

स्थानीय आदिवासी

गोरे लोगों से घोर नफरत करते थे।

गोरों ने आदिवासियों की ज़मीन हड़प ली थी।

परंतु रेड-इंडियन जौनी को

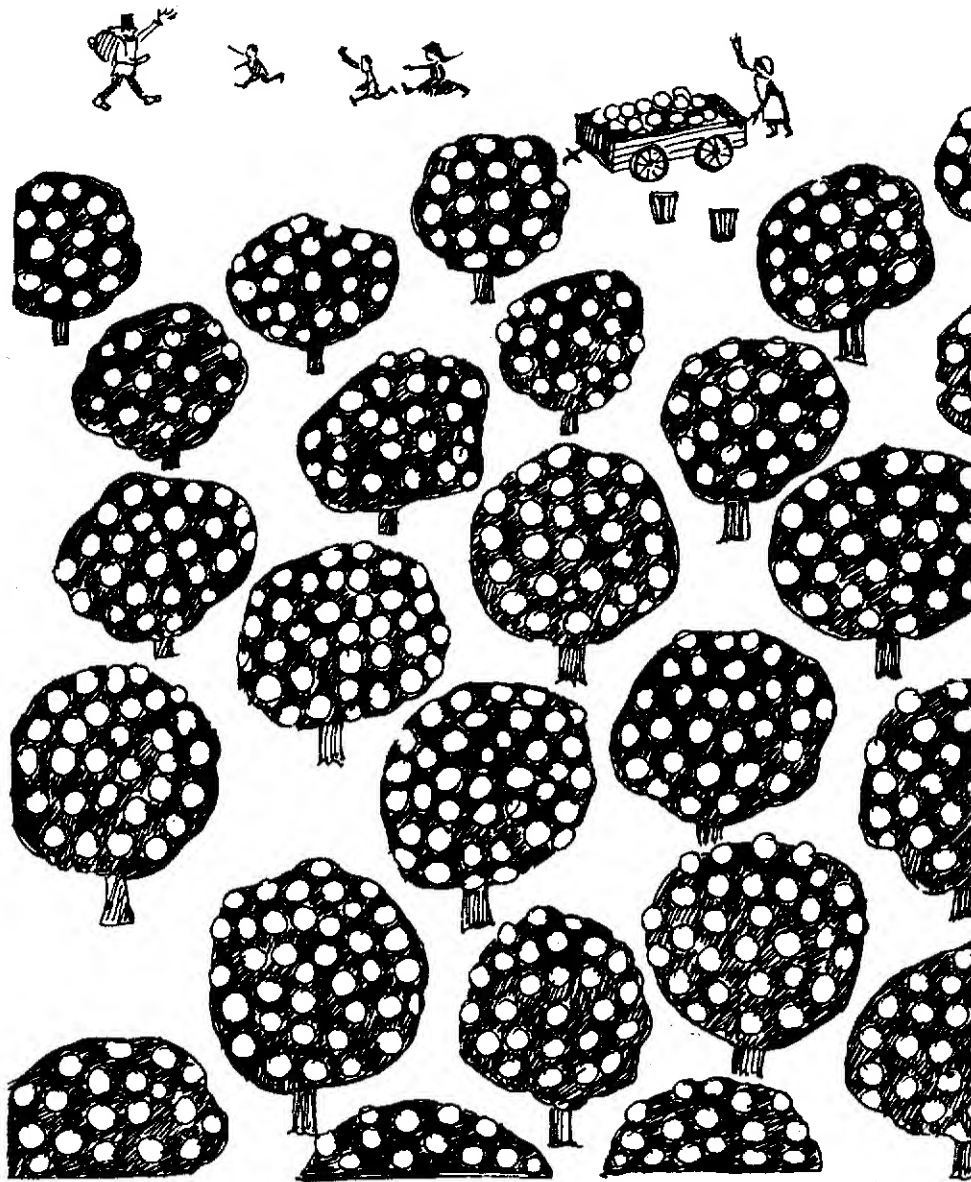
अपना प्रिय दोस्त मानते थे।

During his travels Johnny  
met a lot of native Indians.  
Johnny treated them with respect.  
Johnny gave them seeds to plant  
and herbs to use as medicines.  
The local natives hated the white men.  
The white men had snatched the land  
from the natives.  
But the native Indians  
always considered  
Johnny as their true friend.



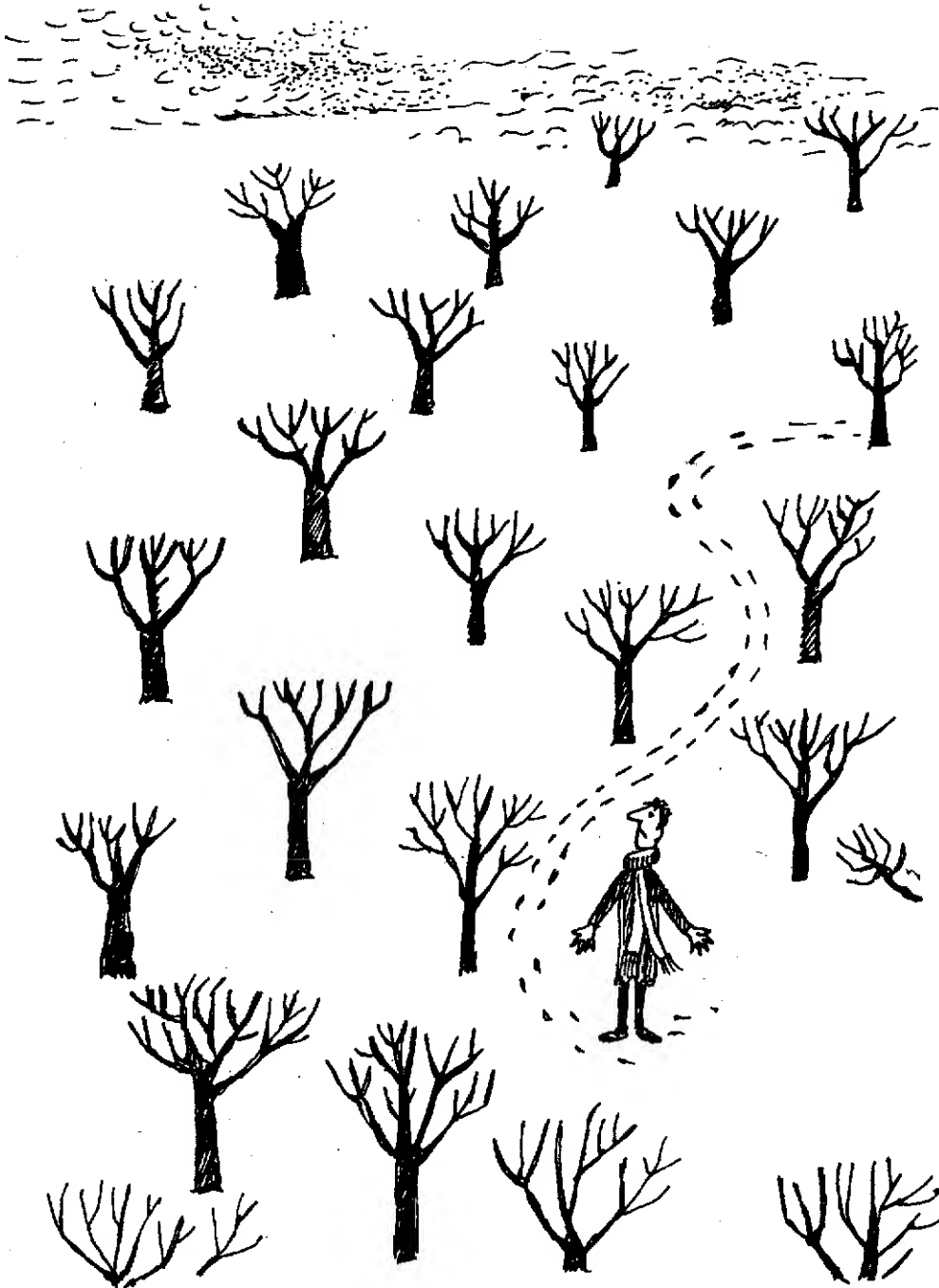
लोगों का आपस में लड़ना-झगड़ना  
जौनी को एकदम नापसंद था।  
वो नए बसने वालों और  
इंडियन आदिवासियों के बीच  
शांति कायम करने की कोशिश करता।  
उसका पक्का विश्वास था कि सभी लोगों को  
आपस में मिलजुल कर  
भाईयों की तरह रहना चाहिए।

Johnny did not like  
people fighting  
amongst themselves.  
He tried to establish peace  
between the new settlers  
and the native Indians.  
He believed that all human beings  
should live together like brothers.



जौनी का पैदल सफर जारी रहता  
 और वो जहां भी जाता वहां पर सेब के बीज बोता।  
 जब उसके पास बीज खत्म हो जाते  
 और जब उसे बीजों की ज़रूरत होती  
 तो वो सेब का रस निकालने वाले कारखानों से  
 बोरे भर-भरकर सेब के बीज ले आता।  
 धीरे-धीरे तमाम लोग जौनी के लिए  
 सेबों के बीज इकट्ठे करने लगे।  
 इस तरह कई साल बीत गए।  
 जौनी एंपिलसीड की यात्रा जारी रही।  
 वो जब अपने पुराने दोस्तों के घर जाता  
 और वहां सेबों से लदे पेड़ों को देखता  
 तो उसे अपार आनंद मिलता  
 और वो खुशी से झूम उठता।

Johnny continued travelling on foot.  
 And wherever he went he planted apple seeds.  
 When the seeds finished  
 he went to the factories  
 producing cider - a kind of apple drink.  
 He collected bags full of apple seeds  
 from the factories.  
 Slowly many people  
 started collecting apple seeds for Johnny.  
 Many years passed.  
 Johnny travelled far and wide.  
 Sometimes when he visited his friends  
 he saw big trees laden with apples.  
 These were the trees he had helped plant.  
 This made him very happy.



फिर एक साल ऐसा आया  
 जब जाड़े के मौसम में  
 बेहद कड़ाके की ठंड पड़ी।  
 वसंत आने के बाद भी  
 सारी ज़मीन बर्फ की परत से ढंकी रही।  
 पेड़ों की टहनियों पर  
 एक भी नया पत्ता नहीं निकला।  
 फिक्र के मारे जौनी न तो  
 खाना खा सका और न ही सो सका।  
 उसे डर था  
 कि कहीं उसके  
 सेब के पेड़ मर न जाएं।

There was a severe winter one year.  
 Even during spring  
 the ground was covered with snow.  
 Not a single new leaf  
 sprouted from the tree branches.  
 This made Johnny very sad.  
 He was not able to eat or sleep.  
 He was afraid  
 that the apple trees might die.





एक दिन  
वो सेबों के बगीचे में  
पेड़ों के नीचे से गुजर रहा था।

अचानक  
जौनी ऐंपिलसीड ज़मीन पर गिर पड़ा।  
वो काफी बीमार हालत में था।  
कुछ घंटों के बाद एक आदिवासी औरत  
और उसका लड़का वहां से गुजरे।  
उन्होंने जौनी को  
ठंडी बर्फ में पड़े देखा।  
लड़का सहायता के लिए  
लपक के दौड़ा।  
जौनी को पास के आदिवासी गांव में  
ले जाया गया।

Then one day when  
Johnny was walking through  
an apple orchard  
he fell down on the ground.  
He was very ill.  
After a few hours  
a native Indian woman and her son  
passed through that way.  
They saw Johnny lying in the snow.  
The boy ran to help Johnny.  
Johnny was taken  
to a near by native settlement.



कई दिनों तक  
जौनी को तेज़ बुखार रहा।  
रेड-इंडियन आदिवासियों ने  
उसे दवाई दी  
और उसकी मन लगाकर  
सेवा की।

Johnny ran high fever  
for a few days.  
The native Indians  
gave him medicines  
and took good care of his health.



चंद दिनों बाद  
 जौनी ऐंपिलसीड ने अपनी आंखें खोलीं।  
 वो अपने इंडियन आदिवासी  
 मित्रों को देखकर मुस्कराया।  
 उसे मालूम था कि  
 उन्होंने ही उसकी जान बचाई थी।  
 उसे सूरज की तेज गर्मी भी महसूस हुई।  
 गर्मी से पेड़ों की बर्फ पिघल गई थी।  
 आखिरकार, वसंत आ ही गया था!  
 तब तक जौनी की  
 तबियत भी सुधर चुकी थी।  
 वो कभी भी अपने मित्रों को नहीं भूला  
 वो बार-बार उनसे मिलने  
 के लिए वापिस आता।

After a few days  
 Johnny Appleseed opened his eyes.  
 He smiled at his native Indian friends.  
 He knew that they had saved his life.  
 Then he felt the warmth of the sun.  
 The snow had started to melt.  
 At last, spring had arrived.  
 Johnny's health had improved.  
 He never forgot his old friends.  
 He visited them again and again.



जौनी ऍपिलसीड  
 एक संवेदनशील पायोनियर था।  
 वो बहुत सालों तक जिया।  
 और वो जहां भी गया  
 उसने सभी जगहों पर सेब के पेड़ लगाए।  
 उनमें से कई पेड़ आज भी खड़े हैं।  
 हम उन्हें आज भी देख सकते हैं।  
 उनके तने की छाल पर झुर्रियां पड़ गई हैं  
 परंतु वे फिर भी सेबों से लदे हैं।  
 पेड़ लगाने और फल उगाने का,  
 अनमोल सबक  
 जौनी ऍपिलसीड ने  
 दुनिया के सारे इंसानों  
 को सिखाया।



Johnny Appleseed was a sensitive pioneer.  
 He lived until he was very old.  
 And wherever he went  
 he planted apple seeds.  
 Many of the trees he planted  
 can still be seen today.  
 The bark of these old trees have deep furrows  
 but they still bear a lot of apples every year.  
 Johnny Appleseed  
 helped the early pioneers  
 to plant lots and lots of apple trees.  
 He helped to green the American countryside.

